

DPN 6324

Title : 1. नित्यपूजा विधि
NITYA PUJA VIDHI 2. यथोक्त विधि पूजा
YATHOKTA VIDHI PUJA
3. श्री गुरु मूर्ति 4. बाला त्रिपुरारण्य
SRI GURU MURTI BALĀ TRIPURĀRĀNYA

Run. No. 7015

Cat. No. MS 3

Micro. No.

Subject Ritual विधि

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 19.8 x 8

Folios 51

Lines (in a page) 8/9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuji. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

मानदास सुगतदास
Mandao Sugat Das

P. T. O.

Pragyanam:-

1. श्री गणेशाय नमः ॥ इषदसौच्य वलां वृणा जडधियां धर्मादि सर्वार्थदं, चि-
न्मात्रा स्फुरण लब्धोद्यमजलं विद्यादि कुलस्वेदना अधाराङ्गुल वीदि कान्त
जलधौ शान्तं वराभीतिदं श्री गणायण कीर्तनं गुरो पादास्तु जन्तो मया ॥
2. ओं नमः श्री महासिपु सुन्दर्य नमः ॥ ॥ अथ यथोक्त विधिना पूजा साधये
त ॥ एकलिंग ॥ पर्वत ॥ गंगासंगमः ॥ सुन्दर ॥ वादिलिङ्ग ॥ विष्णुमूल ॥
3. श्री गुरु मूर्ति... लि ॥ अमरीकुवरी आरभ्य मरी मुरवरी कृतं पुनीकरोतु पुनितं
गौरी चरधापंकजं ॥
4. श्री वालासिपु चक्राय नमः ॥ इति चक्रसंज्ञा ॥ षडंगं विधाय ॥ हृदि-
स्थिता हि संविद्विणीं मणेष व्यवहारादिष्ठा तीं पराशिवां भक्तानु सार्थ...

Conclusion:-

1. इति परदेवताया नित्यपूजा विधि समाप्त ॥ ॥ शुभमस्तु सर्वदा ॥ ॥
2. इति द्वारसंज्ञा ॥ अर्धोत्तम दशदिक्षु निक्षिपे ॥
3. नित्य वंद्य परब्रह्मदी मनीं मिसु
4. ॥ मन्त्रादीनां प्रियाडिनां श्री आर्कडिनां श्री वाला सिपुनां वा यत्पूजितं सदाकव
परिपूर्णा तदस्तु ॥ उपनैव पूजयेत् श्री वालासिपुवार्पणं अस्तु ॥ ॥

20

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

मानवस्य सुगत दासया संकलनं
आमा सफु-कथिवात उपहार !



[illegible]

[illegible][illegible]

10

5

उल्लिखितम् ॥ गन्धर्वनवस्युक्त ॥ नृगन्धर्वमधुलन रुमृयमधु
 लन वसाममधुलन जियुनावाला ग्रीयाणयनमः ॥ वृत्तिस्युक्त ॥
 तस्मिन्मधुममयुक्त ॥ वामरुगकामवीजनद्वितीयनिर्दिष्ट ॥ तः
 नमः ॥ नृकावलिखितम् ॥ काव्यमूलवीजानिमयस्य ॥ अष्टविंश
 गतिवार्त्तसंग्रह ॥ वृत्तिस्युक्त ॥ वृत्तिस्युक्त ॥ वृत्तिस्युक्त ॥
 मातृकासूत्रम् ॥ अष्टविंशमनुजयित्वा ॥ अष्टविंशमनुजयित्वा
 वसुधात्मनि स्य कन्दस्युक्तमनु निधिरुक्कलनयिलि ॥ द्युत्तम
 जयित्वा ॥ धनमयायद्विष्ट ॥ गुरुमनु ॥ अथ अववणयुक्त ॥ गिका

गदवताशानमः ॥ वृत्तिस्युक्त ॥ नृकासोः ॥ ग्रीवाल गियुक्त
 वीग्रीयादूक्त ॥ जयामिगयया मीतिगिवार्त्तसंग्रह ॥ नृकासोः ॥
 चयनमः ॥ नृकासोः ॥ यीयुधनमः ॥ नृकासोः ॥ मनारुवायनमः
 ॥ मूलमनुजयित्वा ॥ गिका गदवताशानमः ॥ गन्धर्वनवस्युक्त
 धृयदीयनवशान्कृत्वा ॥ गन्धर्वनवस्युक्त ॥ सुवारुनाः सायुधाः
 सार्लकाः ॥ सयविवाः ॥ सगक ॥ सद्ययवाः सद्ययवाः ॥
 लीयुधिवीतखनगन्धर्व ॥ नृकासोः ॥ नृकासोः ॥ नृकासोः ॥
 धमाववर्ण ॥ अथ द्वितीयाववर्ण ॥ मूलमनुजयित्वा ॥ गिका

वक्राजदवगाथानमः॥ॐतिर्य्यनिदिय॥ॐक्रोसो॥महालक्ष्मी
 नमः॥३सप्तस्वयेनमः॥३कान्तेनमः॥३कार्येनमः॥३युद्धेनमः॥
 ॥३उद्धेनमः॥मूलमनुजिवाचसंगर्य॥॥३॥वक्राजदवगाथानमः॥
 गन्धादगय्यधृयदीयनेवयार्नकृत्वा॥॥३॥वक्राजदवगाथानमः॥
 सवारुनासयुजितासंगु॥ॐतिद्वितीयावचर्ण॥॥३॥अष्टद
 लदवगाथानमः॥ॐतिर्य्यनिदिय॥मूलविद्ययाजिवाचसंगर्य
 य॥ॐक्रोसो॥ॐनगकसमादवीष्टीयादकायुजयामि तयया
 मिनमः॥३ॐनगमखलादेवी॥३ॐनगमदनादेवी॥३ॐनग

मदनायुजादेवी॥३ॐनगवागिनीदेवी॥३ॐनगवखादेवी॥३
 ॐनगाकूणादेवी॥३ॐनगाकूलामालिनीदेवीष्टीयादकायुज
 यामितययामिनमः॥मूलमनुजिवाचसंगर्य॥॥३॥अष्टदलदव
 गाथानमः॥गन्धादगय्यधृयदीयनेवयार्नकृत्वा॥॥३॥अष्ट
 दलदवगाथानमः॥सर्वा॥सयुजिता॥संगु॥नावाचमदयिदर्थ॥ॐतिद्वि
 तीयावचर्ण॥॥३॥अष्टदलदवगाथानमः॥मूलविद्ययाजिवाचसंगर्य
 य॥ॐक्रोसो॥ॐनगसिर्गागेरुचवानन्दनाथष्टीयादकायुजयामितययामि

अवादीयनाम्नापीयादकायुज्यामितर्ययामि ॥ ३ ॐ नृनरुचवानं
 दनाथपीयादकायुज्यामि ॥ ॐ मादन्धनीयनाम्नापीयादकायुज्या
 मि ॥ ॐ नृनरुचवानन्दनाथपीयादकायुज्यामि ॥ ॐ कोमात्रीयनाम्ना
 ॥ ३ अं काधरुचवानन्द ॥ ॐ वेङ्कटीयनाम्ना ॥ ३ ॐ नमरुचवानन्द ॥ ॐ
 वावालीयनाम्ना ॥ ३ नं कयालिरुचवानन्द ॥ ॐ नृनरुचवानन्द ॥ ३ ॐ
 हीमनरुचवानन्द ॥ ॐ चामुण्डायनाम्ना ॥ ३ अं सरोवरुचवानन्द ॥ ३ ॐ
 मरुलक्ष्मीयनाम्ना ॥ मूलविशयाञ्जुष्टवार्त्तसंगर्था ॥ ॐ हृदलागमि
 दवतास्थानमः ॥ गंधादतयुषधूयदीयनेवशान्ककयति ॥ स्वचनमूर्त्ति

युदर्थ ॥ नृना ॥ ॐ हृदलागमिदवतासर्वोयवावे ॥ संयुजितासंगु ॥ ॐ
 तिवरुधोवचर्त्त ॥ अथयवमावचर्त्त ॥ चतुर्द्धावदवतास्थानमः ॥ ॐ नि
 युष्यनिदिद्या ॥ नं क्रीसो ॥ मूलविशयाजिवावर्त्तसंगर्था ॥ नं क्रीसो ॥ यु
 वे गंगलयतयनमः ॥ नं क्रीसो ॥ दन्दि ॥ नं कयालायनमः ॥ नं क्रीसो
 यन्त्रिम ॥ दृदगायनमः ॥ नं क्रीसो ॥ ॐ नृनरुचवानन्द ॥ चतुर्द्धाव
 दवतास्थानमः ॥ मूलविशयाजिवावर्त्तसंगर्था ॥ गंधादतयुषधूयदीय
 नेवशान्ककयति ॥ नृना ॥ चतुर्द्धावदवतासर्वोयवावे ॥ संयुजितासंगु ॥ युनः ॥

उल्लासवानयुर्जाकुर्यात् ॥ निवक्तव्यमहाविद्याधर्मरत्नान्नान्न
कवीन्दुसर्वकलाललरुवीगनमाश्रय ॥ मूलविश्रयाञ्जुष्टाकन
वार्त्तम ॥ यूनवित्त्वाध्यागल्लासवानयुर्जाकुर्यात् ॥ युजाधिकानार्थः
युर्त्तुयाञ्जुष्टाकुर्यात् ॥ युर्जाकुर्यात् ॥ युजाननन ॥ वदकायवर्त्तित
या ॥ यून४थाउल्लासवानयुर्जाकुर्यात् ॥ यस्यस्मृत्यावनामाका
ययुजाकियादिषु। नूनं सयुर्त्तुतायाति सथावदतमयुर्त्तु ॥ मनुक्षीन
कियाक्षीनं रुक्मिणीं श्रीवालागिरिगवा। ययुर्त्तुनमयादव यनिः
युर्त्तुतदमुम् ॥ यूननयुजनन श्रीवालागिरियुर्त्तुनमम् ॥

25
20

15

10

5

0

C.MS

5

10

15

20

25

30

35

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

न । यत्र तत्कृत्यरुक्ता तां रथानां रथवृत्तिः ॥ ३ ॥ विषयिके ता विषयकाय
 विमलमयविमलितं । यकोलितं प्रकाशाय कृतितं कृतनृत्तिः ॥ ४ ॥ यत्र
 कृत्यार्थः ॥ ४ ॥ तस्य कृत्यार्थः ॥ ४ ॥ सदा सच्चिदनुभूतिः विषयिके रथवृत्तिः
 सत्तं ॥ ५ ॥ ०० निम्बुत्वायुः सच्चिदनुभूतिः ॥ ० ॥ गतामृताक्षरादि
 वृत्तवृत्तात्मकीयतमसच्चिदनुभूतिः सच्चिदनुभूतिः सच्चिदनुभूतिः
 सुलविद्यामञ्जरीयौक्यमण्डलानुभूतिः ॥ ० ॥ आदिनकिं ध्यात्वा तत्पराय
 ठलेयुक्तं स्वर्गवीर्यविशयध्वनानामनुभूतिः सच्चिदनुभूतिः विषयिके रथवृत्तिः
 तद्वन्ति रथवृत्तिः विषयिके रथवृत्तिः ॥ ० ॥ मूलतयथानुभूतिः ॥ ० ॥

तिदत्ताविष्णुश्च ॥ ॐ श्रीमहालक्ष्मी नमः ॥ ॐ नमः स्वयं काल्य ॥ ० ॥ तन्नातयादोग
कर्मकृत्तानं कृत्वा ॥ नमः ॥ ॐ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदश
कर्मकृत्तानं कृत्वा ॥ ॐ नमः स्वयं काल्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ
द्वकं निश्वात नमः कृत्वा ॥ १५ कामिन्वद्वकं नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ
जीवकं विविक्त्य ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ १६ ॥ कामिन्वद्वकं नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदश
कर्मकृत्तानं कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ
वथ ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ
था ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ द्वादिदशकालां संप्रकीर्त्य नमः कृत्वा ॥ अथ

भय ॥ ॐ निजलस्रानविधिधा ० ॥ तताविरुतिभवनं ॥ ॐ अथलीरुम्भभवन
 तसकृद्यवियवादिमविम्भयणीकृद्वणीवालाभिन्नुडादवता रुम्भभवन(वि
 तियाग) ॥ रुम्भंवातयातोतिभयकवसंयुटिकृया ॥ ॐ कं ॐ भतायनमः ॥
 ॐ यतंयुनवाय ॥ ॐ नं अथानाय ॥ ॐ वं वासदवाय ॥ ॐ लं सद्यजानाय ॥
 ॐ यरिमकुमूलतदगभजय ॥ ॐ यन्नचललाटक ॥ ॐ ददितालीयादिया
 दोमवा ॥ ॐ सवायतमः ॥ ॐ द्यादिजुष्टा ॥ ॐ भवनय ॥ ० ॥ अथसन्ध्या
 वदनं ॥ ॐ अथस्याधुवकियागसन्ध्यावदनमर्कविष्य ॥ ॐ नमूदयाजलसु
 मृगीकृत्य ॥ मूलतवावगयसकिसकु ॥ अं अमित्यादिर्कययर्कमाहकाकन ॥
 दि २

[illegible][illegible]

नदकवविनिमित्तदयकिं लालकली भृतिहिमंलुकलारिनामां ॥ मूडाकसुगमनि
 यमकलं निरुकां वल्लभनी नमन कदुहिमंलुकां ॥ ॐ निष्ठावाता लकायम
 ७ ॥ ॥ अतम ८ निवसि ॥ अ २ मयदक ॥ ॐ ॐ नगया ॥ ॐ ॐ कर्मा ॥ ॐ ॐ ता
 सावभुया ॥ ॐ ॐ कथा लया ॥ ॐ ॐ अथ ॥ ॐ ॐ दकयकया ॥ ॐ ॐ का ॥
 अ १ जि का ॥ ॐ ॐ दक वा ॥ ॐ ॐ मूल ॥ ॐ ॐ दक कय ॥ ॐ ॐ दक मनि व ॥ ॐ ॐ दक
 गुलिमूल ॥ ॐ ॐ दका गुला ॥ ॐ ॐ व ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥
 ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥
 ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥ ॐ ॐ दक ॥

ददि ॥ ॐ ॐ अ १ गथा ॥ ॐ ॐ क कृति ॥ ॐ ॐ क कथा ॥ ॐ ॐ क कथा ॥ ॐ ॐ क कथा ॥
 क मवा ॥ ॐ ॐ निता लकायम ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ मूल विद्या ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥
 गियु वसुद्वनी मक गुणी ददि ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥
 वना ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥
 सिद्ध ॥ ॐ ॐ विनियाम ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥
 नदक नम ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥
 नदक नम ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥ ॐ ॐ म ॥
 निष्ठावाता ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥

लामतेजुमसुलायनम॥ॐनिर्मयुध ॥ गणेशमुद्रालिङ्गनिर्वाणाय ॥ १॥ द्वाद
 शकलामतेजुमसुलायन ॥ॐनिर्मयुध यद्येवतजलमाधुर्य ॥ २॥ द्वादशकला
 मतेजुमसुलायन ॥ॐनिर्मयुध धनमुद्रायामतीकृत्य ॥ गणेशकतयुजायक
 वधनित्यागस्वर्गिणीकृत्य ॥ ० ॥ गणेशकलङ्कयुत ॥ निर्वाणमुद्रालिङ्गनिर्वा
 णवद्धावद्वलवद्वमसुलविनिर्वाण ॥ १॥ तैत्तिरीय ॥ ४॥ श्री ॥ १॥ॐनिर्मयुधतेजुमसुलाय
 नयद्यद्यित्तिमात्रेयिणतकावधुर्मयुध ॥ मन्त्रकोमकलालिख ॥ गणेशमुद्रालि
 ङ्गमाधुर्यकृत्य ॥ १॥ संवद्रिमसुलायनकलामतेजुमसुलायनम॥ गणेशमुद्रालि
 ङ्गमुद्रालिङ्गकलङ्कयुत ॥ १॥ ज्ञानमुद्रामसुलायनद्वादशकलामतेजुमसुलायन

१॥ ॐ तिर्मयुषसादकायागुद्धादकादितासायुष्य ॥ १३ ॥ ॐ सामसमुत्तायथाउलकला
कनकलामृताय ॥ १४ ॥ ॐ तिर्मयुष ॥ १५ ॥ वदुर्नवतिकलायातम ॥ १६ ॥ ॐ जूमिताम
रेववायज्जुवका ॥ १७ ॥ ॐ नुनरेववाय ॥ १८ ॥ साहस्यथ ॥ १९ ॥ ॐ वदुर्नववायडुको
साय ॥ २० ॥ ॐ काभरेववायमेवका ॥ २१ ॥ ॐ उतुकरेववायडुवागमे ॥ २२ ॥ ॐ कया
लरेववायनेवांसुंमय ॥ २३ ॥ ॐ सीषलरेववायडुवागमे ॥ २४ ॥ ॐ मलावरेवका
यज्जुमहाल ॥ २५ ॥ ॐ तिरेववमिथुर्नयुवादिज्जुमयाकेसंयुष ॥ २६ ॥ ॐ मूंमूंमूंमूं
नम ॥ २७ ॥ ॐ लम ॥ २८ ॥ ॐ नवयानियकविलिख ॥ २९ ॥ ॐ मयि
का ॥ ३० ॥ ॐ मिनि ॥ ३१ ॥ ॐ किदिन ॥ ३२ ॥ ॐ मिनि ॥ ३३ ॥ ॐ यवत ॥ ३४ ॥ ॐ थमिनि ॥ ३५ ॥ ॐ उतुवन ॥ ३६ ॥ ॐ मयि
॥ ३७ ॥ ॐ ॥ ३८ ॥ ॐ ॥ ३९ ॥ ॐ ॥ ४० ॥ ॐ ॥ ४१ ॥ ॐ ॥ ४२ ॥ ॐ ॥ ४३ ॥ ॐ ॥ ४४ ॥ ॐ ॥ ४५ ॥ ॐ ॥ ४६ ॥ ॐ ॥ ४७ ॥ ॐ ॥ ४८ ॥ ॐ ॥ ४९ ॥ ॐ ॥ ५० ॥ ॐ ॥ ५१ ॥ ॐ ॥ ५२ ॥ ॐ ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ ५५ ॥ ॐ ॥ ५६ ॥ ॐ ॥ ५७ ॥ ॐ ॥ ५८ ॥ ॐ ॥ ५९ ॥ ॐ ॥ ६० ॥ ॐ ॥ ६१ ॥ ॐ ॥ ६२ ॥ ॐ ॥ ६३ ॥ ॐ ॥ ६४ ॥ ॐ ॥ ६५ ॥ ॐ ॥ ६६ ॥ ॐ ॥ ६७ ॥ ॐ ॥ ६८ ॥ ॐ ॥ ६९ ॥ ॐ ॥ ७० ॥ ॐ ॥ ७१ ॥ ॐ ॥ ७२ ॥ ॐ ॥ ७३ ॥ ॐ ॥ ७४ ॥ ॐ ॥ ७५ ॥ ॐ ॥ ७६ ॥ ॐ ॥ ७७ ॥ ॐ ॥ ७८ ॥ ॐ ॥ ७९ ॥ ॐ ॥ ८० ॥ ॐ ॥ ८१ ॥ ॐ ॥ ८२ ॥ ॐ ॥ ८३ ॥ ॐ ॥ ८४ ॥ ॐ ॥ ८५ ॥ ॐ ॥ ८६ ॥ ॐ ॥ ८७ ॥ ॐ ॥ ८८ ॥ ॐ ॥ ८९ ॥ ॐ ॥ ९० ॥ ॐ ॥ ९१ ॥ ॐ ॥ ९२ ॥ ॐ ॥ ९३ ॥ ॐ ॥ ९४ ॥ ॐ ॥ ९५ ॥ ॐ ॥ ९६ ॥ ॐ ॥ ९७ ॥ ॐ ॥ ९८ ॥ ॐ ॥ ९९ ॥ ॐ ॥ १०० ॥ ॐ ॥ १०१ ॥ ॐ ॥ १०२ ॥ ॐ ॥ १०३ ॥ ॐ ॥ १०४ ॥ ॐ ॥ १०५ ॥ ॐ ॥ १०६ ॥ ॐ ॥ १०७ ॥ ॐ ॥ १०८ ॥ ॐ ॥ १०९ ॥ ॐ ॥ ११० ॥ ॐ ॥ १११ ॥ ॐ ॥ ११२ ॥ ॐ ॥ ११३ ॥ ॐ ॥ ११४ ॥ ॐ ॥ ११५ ॥ ॐ ॥ ११६ ॥ ॐ ॥ ११७ ॥ ॐ ॥ ११८ ॥ ॐ ॥ ११९ ॥ ॐ ॥ १२० ॥ ॐ ॥ १२१ ॥ ॐ ॥ १२२ ॥ ॐ ॥ १२३ ॥ ॐ ॥ १२४ ॥ ॐ ॥ १२५ ॥ ॐ ॥ १२६ ॥ ॐ ॥ १२७ ॥ ॐ ॥ १२८ ॥ ॐ ॥ १२९ ॥ ॐ ॥ १३० ॥ ॐ ॥ १३१ ॥ ॐ ॥ १३२ ॥ ॐ ॥ १३३ ॥ ॐ ॥ १३४ ॥ ॐ ॥ १३५ ॥ ॐ ॥ १३६ ॥ ॐ ॥ १३७ ॥ ॐ ॥ १३८ ॥ ॐ ॥ १३९ ॥ ॐ ॥ १४० ॥ ॐ ॥ १४१ ॥ ॐ ॥ १४२ ॥ ॐ ॥ १४३ ॥ ॐ ॥ १४४ ॥ ॐ ॥ १४५ ॥ ॐ ॥ १४६ ॥ ॐ ॥ १४७ ॥ ॐ ॥ १४८ ॥ ॐ ॥ १४९ ॥ ॐ ॥ १५० ॥ ॐ ॥ १५१ ॥ ॐ ॥ १५२ ॥ ॐ ॥ १५३ ॥ ॐ ॥ १५४ ॥ ॐ ॥ १५५ ॥ ॐ ॥ १५६ ॥ ॐ ॥ १५७ ॥ ॐ ॥ १५८ ॥ ॐ ॥ १५९ ॥ ॐ ॥ १६० ॥ ॐ ॥ १६१ ॥ ॐ ॥ १६२ ॥ ॐ ॥ १६३ ॥ ॐ ॥ १६४ ॥ ॐ ॥ १६५ ॥ ॐ ॥ १६६ ॥ ॐ ॥ १६७ ॥ ॐ ॥ १६८ ॥ ॐ ॥ १६९ ॥ ॐ ॥ १७० ॥ ॐ ॥ १७१ ॥ ॐ ॥ १७२ ॥ ॐ ॥ १७३ ॥ ॐ ॥ १७४ ॥ ॐ ॥ १७५ ॥ ॐ ॥ १७६ ॥ ॐ ॥ १७७ ॥ ॐ ॥ १७८ ॥ ॐ ॥ १७९ ॥ ॐ ॥ १८० ॥ ॐ ॥ १८१ ॥ ॐ ॥ १८२ ॥ ॐ ॥ १८३ ॥ ॐ ॥ १८४ ॥ ॐ ॥ १८५ ॥ ॐ ॥ १८६ ॥ ॐ ॥ १८७ ॥ ॐ ॥ १८८ ॥ ॐ ॥ १८९ ॥ ॐ ॥ १९० ॥ ॐ ॥ १९१ ॥ ॐ ॥ १९२ ॥ ॐ ॥ १९३ ॥ ॐ ॥ १९४ ॥ ॐ ॥ १९५ ॥ ॐ ॥ १९६ ॥ ॐ ॥ १९७ ॥ ॐ ॥ १९८ ॥ ॐ ॥ १९९ ॥ ॐ ॥ २०० ॥ ॐ ॥ २०१ ॥ ॐ ॥ २०२ ॥ ॐ ॥ २०३ ॥ ॐ ॥ २०४ ॥ ॐ ॥ २०५ ॥ ॐ ॥ २०६ ॥ ॐ ॥ २०७ ॥ ॐ ॥ २०८ ॥ ॐ ॥ २०९ ॥ ॐ ॥ २१० ॥ ॐ ॥ २११ ॥ ॐ ॥ २१२ ॥ ॐ ॥ २१३ ॥ ॐ ॥ २१४ ॥ ॐ ॥ २१५ ॥ ॐ ॥ २१६ ॥ ॐ ॥ २१७ ॥ ॐ ॥ २१८ ॥ ॐ ॥ २१९ ॥ ॐ ॥ २२० ॥ ॐ ॥ २२१ ॥ ॐ ॥ २२२ ॥ ॐ ॥ २२३ ॥ ॐ ॥ २२४ ॥ ॐ ॥ २२५ ॥ ॐ ॥ २२६ ॥ ॐ ॥ २२७ ॥ ॐ ॥ २२८ ॥ ॐ ॥ २२९ ॥ ॐ ॥ २३० ॥ ॐ ॥ २३१ ॥ ॐ ॥ २३२ ॥ ॐ ॥ २३३ ॥ ॐ ॥ २३४ ॥ ॐ ॥ २३५ ॥ ॐ ॥ २३६ ॥ ॐ ॥ २३७ ॥ ॐ ॥ २३८ ॥ ॐ ॥ २३९ ॥ ॐ ॥ २४० ॥ ॐ ॥ २४१ ॥ ॐ ॥ २४२ ॥ ॐ ॥ २४३ ॥ ॐ ॥ २४४ ॥ ॐ ॥ २४५ ॥ ॐ ॥ २४६ ॥ ॐ ॥ २४७ ॥ ॐ ॥ २४८ ॥ ॐ ॥ २४९ ॥ ॐ ॥ २५० ॥ ॐ ॥ २५१ ॥ ॐ ॥ २५२ ॥ ॐ ॥ २५३ ॥ ॐ ॥ २५४ ॥ ॐ ॥ २५५ ॥ ॐ ॥ २५६ ॥ ॐ ॥ २५७ ॥ ॐ ॥ २५८ ॥ ॐ ॥ २५९ ॥ ॐ ॥ २६० ॥ ॐ ॥ २६१ ॥ ॐ ॥ २६२ ॥ ॐ ॥ २६३ ॥ ॐ ॥

वलकिणी०॥१मणकिणी०॥१जुमणकिणी०॥०॥मिथिनित्यापुजय०॥
 १कामध्वनी०॥१रुमालिनी०॥१नियत्रिना०॥१रुमणी०॥१वक्रि
 दासिनी०॥०॥नियधमप्रवाया०॥०॥१महाविश्वनी०॥१निवदुनी०॥१
 वविता०॥१कलसुदनी०॥१नियनित्या०॥०॥नियधमप्रवाया०॥०॥१नील
 यताकली०॥१विजया०॥१सर्वसमला०॥१कालामालिनी०॥१विगा०॥०॥ति
 दकिनाप्रवाया०॥मध्याह्नी०॥१रुमणविलासता०॥०॥नितिनितिनित्या०॥०॥
 नतकिनाप्रवाया०॥मध्याह्नी०॥१रुमणविलासता०॥०॥नितिनितिनित्या०॥०॥
 नतकिनाप्रवाया०॥मध्याह्नी०॥१रुमणविलासता०॥०॥नितिनितिनित्या०॥०॥

१कलदयामा०॥१कलध्वनानद०॥१कामध्वर्यमा०॥०॥नितिदियोद्या०॥०॥
 नताद्वितीयप्रवाया०॥१कामध्वनानद०॥१विजयानद०॥१समयानद०॥१
 सरुजानद०॥०॥नितिसिद्धिद्या०॥०॥१नियधमप्रवाया०॥१गगनानद०॥१
 १विजयानद०॥१विमलानद०॥१मदतानद०॥१युवतानद०॥१लीलानद०॥
 १विलासतानद०॥१विजयानद०॥०॥नितिमनयोद्या०॥०॥१जुमणध्वनानद०॥
 यवता०॥१समयानद०॥१नितिसिद्धिद्या०॥०॥१नियधमप्रवाया०॥१गगनानद०॥१
 नितिसिद्धिद्या०॥०॥१नियधमप्रवाया०॥१गगनानद०॥१
 यतम०॥११जुमणध्वनानद०॥१समयानद०॥१कामध्वर्यमा०॥१विलासतानद०॥१

सर्वत्र नक्षत्री मूर्धा यदृष्टं ॥ नित्यं यथावत् ॥ ० ॥ सर्वार्थसाधकवृत्तं
 यतः ॥ नित्यं यथावत् ॥ सर्वसिद्धिप्रदा ॥ सर्वसमर्थप्रदा ॥ सर्वार्थ
 यकत्री ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वकामप्रदा ॥ सर्वदुःखविनाशिनी ॥
 सर्वसुखप्रदा ॥ सर्वविघ्ननिवारिणी ॥ सर्वसिद्धिप्रदा ॥ सर्वसौ
 गन्ध्यायिनी ॥ नित्यं यथावत् ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 कूलकोलयागिनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 किं ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥

सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥
 सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥ सर्वसमर्थलकाविनी ॥

कालि पुजा मंत्रकुट्टसहीतभोः

मानदास सुगत दासभा संकलनं
भाषा: सफु-कुथियात उपहार ।

तस्यैव तस्यैव तस्यैव ॥ १ ॥ कारिणिदिनसमिन्माताविधुतलोवरु ॥ २ ॥ अमि
 वासितसर्वादि तस्यैव ॥ ३ ॥ सर्वसिद्धादिनकीतामितिनीतातवत्तु ॥ ४ ॥ वसीनी
 पुरितानि तस्यैव ॥ ५ ॥ सर्वकुदिसकलकि ॥ ६ ॥ यराभगसकल ॥ ७ ॥ लकिव
 कादयवम तस्यैव ॥ ८ ॥ वाद्यवनामयुशोधय ॥ ९ ॥ वाक्कतिवासिती ॥ १० ॥ विमि
 समिताद्यैव तस्यैव ॥ ११ ॥ यान्मकुलधन ॥ १२ ॥ दिनयनविमि विनेभसकलकु
 निवददित तस्यैव ॥ १३ ॥ कासश्चनी ॥ १४ ॥ वाक्कतिवासिती ॥ १५ ॥ वरु
 तिसादिति तस्यैव ॥ १६ ॥ सकलसवित्तु ॥ १७ ॥ मकलस्यदसकलतता ॥ १८ ॥ सकलकु
 सकलति ॥ १९ ॥ सकलसर्व ॥ २० ॥ जसकलसव ॥ २१ ॥ विदुतादस्यमुदितनी ॥ २२ ॥ उदने

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
पुष्पनिघण्टु ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५

रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५
रत्नकाव्य १००५ गीति १००५ रु १५

या लाययायू॥ श्री कामधेयाययायू॥ वं नतियायू॥ सौं ह्यीतियायू॥
 वं वसकया॥ उं न चिनिधियायू॥ उं यद्व निधियायू॥ उं नत सायानयायू॥
 उं तिव धुमदोप॥ वं सनसगी यायू॥ श्री महा लक्ष्मी यायू॥ उं मायाणी
 यायू॥ द्रु द्रु श्रेयायू॥ उक्त नदाय॥ उं रुद्र काली यायू॥ उं सस्त्रिणी यायू॥
 उं स्वाहा यायू॥ उं गुरु कर्मा यायू॥ उं गेनी यायू॥ उं लाक धानी यायू॥ उं व
 या ग भुनी यायू॥ उं तिद्वाने सवृज॥ उं नक्तने नद गदि कनिदिथ॥
 श्री विष्णु

श्री गुरु मूर्ति श्या ज्ञानमः॥ अथ सफुल्ल यामंत्र मला
 कर्त्तुं स्व त सा पंच म हा पात के जू शो, आ धी सो
 न हा म हा भू त द सा व व नि व से हि इ रो
 श्री गुरु श्या ज्ञा गुरु द्रो हि॥ ॐ ३॥

सर्वोप
 समकोपेन दियते समनज्ञायते धीयतामह

(श्रीगुरुमूर्ति) ति॥ अमरीकवरीचारत्रमरीमुखरीकृतं। दुरीकरोतु
 इतितं नौरीवरधायंकजं॥ ब्राह्मेमुहूर्तेचोयायसुविस्वासनेसमुपविस्था॥ श्रीगु
 उंधायेन॥ प्रातःसिरसिसुकेत्रेदिनेत्रदिनुजंगुडु। वराजयकरंसांतंस्मरेन्ननाम
 रं॥ स्फुरदुक्तनिजादेवीगुरुपत्नींनसंस्मरेत्॥ इतिध्याना॥ अथश्रीगुरुयादु
 नानास्यदेविणामूर्तिःकृषिःयन्तिस्वदःश्रीगुरुदेवताममस्वीविद्यांगत्वे
 नन्यास्येविनियोगः॥ ह्रीं ह्रदयायनमः॥ ह्रीं सिरसे स्वाहा॥ ह्रीं निखायैवषट्।
 ह्रीं ककवचायहं॥ ह्रीं नेत्रत्रयायैवौषट्। ह्रीं अस्त्रायफट्॥ ३ ह्रीं ह० अं ह० उं ह०
 शी ह्रीं ह० उं शीयरपावकसवाराधे सर्वमुद्योपुरनाथे सर्वगुरुस्वयंगुरुश्री

पुननाथरह० ओं ह्रीं ह० इं ह० उं ह० अं श्रीसंतुगुरुह्रीं श्रीअमुकानंदना
 यश्रीयादुकांयुजयामि॥ इतिस्वगुरुत्रयंसंघत्रमुद्रयासिरसिसंयुज्यकनिषांउ
 षुक्रमेणलदेत्यादिर्वाजैःपुष्टिणाकाशाद्यात्मकनंवादिपंचोयचारेसंयुज्य॥ तंमंत्रंय
 मन्त्रिजयित्वानिवेद्य॥ द्रांदिक्कां वंसः॥ त्रिपंचमुद्रानिप्रणम्यकृतांजलि॥ नमस्ते
 ॥ अथ॥ इतिस्तुत्यायामेदितिगुरुध्यानविधिः॥ ० ॥ अथमूलविद्याध्यानं॥ त
 ॥ १ ॥ तदित्कोटिसमग्रंविषतंतुतनीयसी। साह्रविवलयाकारावर्णम
 यीकुंडलिनी॥ लुजगोयमीसंचित्यगुरुयदिष्टविचिनाषडुजनेदक्रमेणवृत्तरंभुनीत्वा
 परमस्त्रिवेनसहविस्वामृतदमृतधाराप्लावनेनप्रयंचंस्त्रिवंतियुनःषडुक्स्त्रायन
 क्रमेणमूलाधारमयदितिदिवारंधात्वा॥ पुनस्तामेवकुंडलिनीमूलविद्याइयेण

परिनतां ध्यायत् ॥ तद्यथा ॥ मूलादिवृक्षं रंध्रात् मूलविद्याविना वयत् ॥ उद्यदादित्यं
 काशं नित्यानंदं सूर्यं चिच्छिन्ना विद्युकोटि विलासं मूलधरं ज्योतिस्फलं वाग्वरुणा
 लक कसं निकाशं समलं श्री कोमराजोद्भवं कर्पूरस्युटि केदु कुंदधवलं तानीय
 कं सौमवं आधारे दृढं यत्नं लाटं यत्नं लेखी जत्रयं भावयत् ॥ इति ध्यात्वा ॥ तस्याः क
 ष्यादि करवदं न न्यासं पूर्वकं त्रिः प्राणा नायस्य ध्यात्वा मुद्राः प्रदृश्या ॥ यथा सक्तिज
 यित्वा ॥ पुनः षडंगं दि पूर्वकं जयं निवेद्य ॥ मूल मूर्धन्यं वा तद्यन्नितिसायां तं ॥ इति
 निवेद्य कृतांजलि ॥ कुंदस्मितं कुटिलकुतलमिदं कुंदं कुंदः शिखा नैरय वायुयदार
 विंदं ॥ कंदर्प कंदर्प कर मां कुर कालं मेद्य संतः पुरं पुरं रियोर वलोकयाम ॥ १ ॥ यात
 प्रयुक्त सरसी दुहय मनेत्रं मातः ससां क सकला कलि तावतं से मुग्धं दुग्धं सदा

रिणी सैरक नौ नित्यं युसाद मम देदिव वाचि नृति ॥ २ ॥ जं नौ ज कुं न नय न धृ सीत
 नानु कुं नौ इवादि मुनि से वितपाद यमं ॥ कुं नौ इ कुं न यरियं धि कु वा निरामं स
 नोः कलत्रमनं धैयुषा मा मि नित्यं ॥ ३ ॥ करार विंदं सुर क ल्य वली ॥ यदार विंदं न
 यमौ लिमाला ॥ मातस्त्व कारा धनत सला ला ॥ मुखार विदे सर सं क वित्यं ॥ ४ ॥ सक
 रंद कणा दु मा स नं वा म इता मंजलि लाहितं यदं वा ॥ सय नं यर मान पार ये वा वि
 सर त्वं व कटाक्ष वि श्रयं ते ॥ ५ ॥ यः श्लोक यं व क मिदं प्रात न्निर्त्य य ठेत्तरः ॥ तस्मै दुग्धा
 द रं सा सात श्री नाथः पुन मय यः ॥ ६ ॥ इति ध्यात्वा ॥ अद्यत्यादि पूर्व कं माया पूर्व द्य
 र हो रा विवे दित मुग्धा सनिः स्वा सात्म कं षत्स ता धि क मे क दि स ति स ह स सं ख्या क मे
 मज्जा जयं मूला धारा दि स प्र व के सु सि ते न्यो ग य ता दि न्यः सं स र्प न म द क

नमः॥ क्रीं काम देवाय नमः॥ इति दंता शोधनं॥ श्रीमहालक्ष्मीं॥ इति मुखका लनं॥ ॐ सौः वय
 दस्वादेति शिखावर्धनं॥ न तो ज ना सस्यु सा लिततीरे वौ त व छादिके संस्कारा॥ वृत्त ज ले न म
 लोप क षण् स्नानं वदिते व वि वाय ना नि मा ज्ञे त ले स्थि ता अद्य त्या दि स्नान म द क लि थ इ ति सं
 कल्प ॥ १॥ पुरितो ज ले ह स मा चं वतुर स्मं उ ले च वा ॥ अ ष्ठा दि पूर्व कं ॥ १॥ क्रीं मिथं कुश
 मुद्रया ती र्थ ना ल ष्य त व सं यो ज्म ॥ २॥ यं १० रं १० वं १६ इत्यतिमं श्रीमती कृत्य मूलं स्मरन्
 विनिर्मज्ज्यो न्म ज्म गु स मुद्रया शिरस्त्रि प्रोक्ष्य त वै रा व स्य दे व अ पि पितृ संतर्प्य मू० त्रिः संतर्प्य
 पुनः षडंगमाचरेत्॥ ततो र्ध्वं वक्ष्यं परिचाय सर्वानेकारं देवैः ॥ य सं ध्या ॥ अथ मय सं के
 ल्या क षा दि पूर्व कं जल म ती कृत्य द स पा वु रु को द कं गृ हि ॥ त व रे च यं त र मा म
 तै ॥ सू० त त मुद्रया शिरस्त्रि प्रो क्षा व सि ष्टु ज ले ते जो म यं मि ॥ य त्व दे हा त स्मं क लु

षं प्रसात्य कृष्यावर्त्तयिं गतया निर्गतं मत्वा स्ववामे वज्रं शिंतां ध्यात्वा ॥ २॥ स्त्री यस्तु हं फट् द
 त्या स्फा ल्य क लो प्र सा ल्य ॥ २॥ क ५ आ त्त त तं सो च या मि० स्वा हा ॥ २॥ वि द्या त त्वं सो च या मि०
 स्वा हा ॥ २॥ स उ श्वि त त्वं र त्र या मि० स्वा हा ॥ २॥ क ५ हृ द स त्वं र त्र या मि० स्वा हा ॥
 इत्या च त्म सूर्य मंड ले दे वां ध्या त्वा ज ले न यं वो य चारैः सं पू ज्म ज लो ज नि मा दा यो त्या य ॥ २॥ क ५
 वो य वे श्व री वि ष्म हे हृ द य का मि नी श्व री धी म हि स त न्न श क्रिः प्र वो द या त ॥ श्री महा त्रि पु
 र सुं द री श्री या दु का ये ष ते र्था स्वा हा ॥ त्रि ॥ अ ष्ठा र्था र व य द धा त्रिः चा सौ र म नु स्म र न ॥
 २॥ ह्रीं दे सः सूर्या या र्था य रि क ल्य या मि न मः त्रि ॥ मूल० त्रि सं त यं मु द्रा प्र दृ श्य ॥ गाय त्री
 मू त वि द्यां य धा श क्रि ज यि ता नि वे द्य तां स्वरु दि वि ष्टु य ष डं गं मा च रे त ॥ ज्ञान सं ध्या दि कं
 कृ त्वा र क्त व स्त्रां ग नु ष णं या ग मं दि र मा ग त्वा ता श्रा वि त्र वि चि त्रि तं ॥ अ ने क धू व व ह

लंघुष्यक ए दूरितं नो मय नो यलितं च बाहुयुष्य वितानितं ॥ ३ विष्णु सर्व भूत मंडपा
 य नमः ॥ इति ध्यात्वा संयुज्य ॥ वहिरिंद्रादि दक्षदिकपालान् संयुज्य ॥ द्वा रस्य दक्षवाम
 साख्योः ॥ १ गंगा तैः साय ॥ २ संक्षत्रया लाय ॥ ३ ध्वजा त्रै ॥ ४ विविधा त्रै ॥ ५ गंगा
 यै ॥ ६ यं यमुना यै ॥ ७ संखनिधय ॥ ८ पद्मनिधय ॥ ९ उद्भवा रवा यै ॥ १० द्वा र
 श्रीयै ॥ ११ अक्ष ॥ १२ देह ल्यै ॥ द्वा रस्य वामना मे ॥ १३ सुतिरस्क र्यै ॥ इति संयुज्य ॥ कृतां
 जलिः ॥ द्वा रं यन्मया कर्म यत्करिष्यामि यत्कृतं तत्सर्वं कृपया देवि निर्विघ्नं कुतु मे स
 दा ॥ इति नमस्कृत्य वहत्या दपुरः सरसं ततो गत्वा ॥ १ वास्तु धियतये ॥ २ नमः ॥ नैऋ
 त्यै ॥ ३ हस्त मल वयं द्वा यना यश्री ॥ इति ईसा नो संयुज्य कृतां जलिः ॥ दीय ना यश्री
 स्वा मिन् देशिक स्वात्मनो यक ॥ श्री चक्र न्या स पूजा र्थं मनुजां दियतां मयि ॥ इति संघा

र्थं पूजा स्वातं विष्णु पादी नि कृता दिवा विनय ॥ १ स्वासन स्था नाय ॥ २ देवा स र स्था नाय
 ॥ इति संयुज्य ॥ कृतां जलिः ॥ पुष्टि त्वया कृता लोका देवित्वं विष्णु नाधृता त्वं च धारयमान
 देवि य विवें कुतु वासनं ॥ इति संघा र्थं तत्र स्वासन मा स्तीर्य ॥ १ ह्रीं सर्व भूत कर्म लासन
 य नमः ॥ इति संयुज्य ॥ २ कासनो य विष्णु वक्रो द्वा रं समाचरेत् ॥ स्वाग्र पिडा दे ॥ विं
 त्रिको षट् सुको षट् शारयुग्मं मन्त्र सुनाग दक्ष संयुतयो दसोरं दारै स्तुति रनि
 तः चतुरस्र मेकं श्री चक्र मेत दुदितं यर देवता याः ॥ इति यंत्रो द्वा रः ॥ यथे का पि
 मुखे मंत्रितं त्रैलोक्यं विष्णु सुधीः ॥ प्राङ्मुखः सम्यग्गामी नो गुह्यं न त्वानिजंततः ॥ या विष्णो
 तं कर्मात्मे दे र्ध्वं चक्रं मंत्रिकः ॥ नुमंत रिक गगनं नूतान् संत्रा सय दुवः ॥ प्राकार त्रय दि
 यं धना वास्त्र ए मंत्र वित् ॥ नूत शुद्धि ॥ तत्र दं स इति प्रा णा या मे न जी वेन सह कुं डलिनी

वृमन विवेकसु लज्जानुयसं दृष्ट्य सो वा कुसौ ॥ वृमनस्य सिरो येत स्वर्णस्ते यज्जुन द
 य ॥ सुरायान दृष्ट्येनं गुडतय कटि दयं ॥ तत्सं सगिय ददं अंग पुत्य गयात क उ प
 यात करो मा पार कस्य सुवि मो वन ॥ स्व ऊ वर्म धरं कृ षां कुडुं या प वि चित येत ॥ वृम
 नं वा यु वी जे न सो ष य न न वे त नुं व वि वी जे न सं द य द्रा व ये द स तां दु ना ॥ नू म्यो तु क ठि
 नी कृत्य दं वी जे न वि ने द्य व नू ते त्य ति वि चिं त्या य जी वं स्था ने स मा न ये त ॥ इ ति च त स द्धि ॥
 अ ग्रे द्रा ण य ति ष्ठा ॥ १ अं सो दं ॥ इ ति वि ॥ अं म अ मा न्या व य द ॥ २ अं अ ना मि का न्या दं ॥
 १ सौः क नि षि का न्या व य द ॥ २ अं अं गु षा न्या न मः ॥ २ अं ते र्ज नि न्यां स्था स्ता ॥ २ सौः क र
 त ल क ल पृ ष्ठा न्या क द ॥ इ ति क र सु द्धि न्या स ॥ ऐं क्री सौः वि पुरे स्वरौ सां र स र स्वा दा ॥
 शा य ये दि त्या त्म र सो ॥ १ क्री क्री सौः वि पुर सुं द र्या त्मा स ना य ॥ वा द यो ॥ २ दं क्री सौ वि पुर

वा सि नी सर्व व का स ना य ॥ जं द यो ॥ १ हौं हूं ह्रीं सौः वि पुर स्त्री सर्व मंत्रा स ना य ॥ २ क्री क्री वें
 वि पुर मा लि नी सा शि डा स ना य ॥ लिं गे ॥ इ ति च तुरा स त न्या स ॥ अ स्त य स्त्री म त्त वि पुर सु
 द री मंत्र स्त र स्त्री व क्रि षा मु त्रि क षिः यं त्रि ष्ठ दः १ स्त्री म त्त वि पुर सुं द री दे व ता ॥ २ क
 य वी जं स ॥ सु वि रु द्ध की ल कं ॥ स म स्त्री गुरु दे व ता श्री त य र्ज ये वि नि यो गः ॥ १ क य न मः
 ना न्या दि या यं तं ॥ २ हं न मः ग ला दि ना न्या तं ॥ १ स र न मः सु डी दि ग त्ता तं ॥ २ क य न मः वा
 म या पि त ले ॥ २ हं न मः द क्षा या पि या पि त ले ॥ १ स र क न उ न ये सें सु द यो ॥ यं व वा न
 का म अं ग रा दि सु च से त ॥ इं डी व रा वा ण य ॥ इं डी न य वा ण य ॥ इं डी अ क र्ण वा ण य
 या य ॥ इं डी व सि क र वा वा ण य ॥ सें सें मो द न वा ण य ॥ इं डी का मा य ॥ इं डी म न्म था य ॥
 ऐं कं द यी य ॥ इं डी म क र वा जा य ॥ इं डी मी न के त वे ॥ वि रा वृ त्या क र न्या स वि वा य ॥ क य

सर्वज्ञतायै हृदयाय नमः ॥ रुद्रनित्यतृप्ततायै स्मिरसे स्वाहा ॥ २४ ॥ अनादिबोधा
 ये स्मिरवाये वषट् ॥ २५ ॥ स्वतंत्रतायै कवचाय हुं ॥ २६ ॥ नित्यमलुप्ततायै नेत्रत्रया
 ये वौषट् ॥ २७ ॥ अनंततायै अस्त्राय कट् ॥ २८ ॥ सद्यः सारङ्गं युट् ॥ इति सिद्धिं मान्यासा
 अथ अंतर्वर्तिमार्तिकां न्यसेत् ॥ २९ ॥ २५ नमः कसमयि वंद्ये ॥ २६ ॥ दक्षया पित
 ले ॥ २७ ॥ दक्षया पोये ॥ एवं वामे ॥ २८ ॥ दक्षकक्ष ॥ २९ ॥ दक्षकुर्वरे ॥ ३० ॥ दक्षया
 पोये ॥ एवं वामे ॥ ३१ ॥ दक्षगुल्फे ॥ ३२ ॥ दक्षया दत्तले ॥ ३३ ॥ दक्षया पोये ॥ एवं व
 मे ॥ ३४ ॥ दक्षोलुमुले ॥ ३५ ॥ दक्षजानुनि ॥ ३६ ॥ दक्षया दे ॥ एवं वामे ॥ ३७ ॥ दक्षि
 सि ॥ ३८ ॥ रुद्रि ॥ ३९ ॥ गुह्ये ॥ एतद्वरो देनायि विन्यस्यदिति विद्या न्यासः ॥ एवमे
 व ॥ सोत्रयोश्चिबुके देवि शंखास्यबुद्धौ न्यसि ॥ असद्यो वरुदये न्यस्यत्तु य

रकुशयु ॥ जानं ध्रुवा दगुह्ययु पाश्वयो रुद्रयां बुजे स्तनदयो कंठदे से नवयो नि
 न्यसेदिति ॥ ४० ॥ पुनः पंचकाण्डाका मण्डं विधाय ॥ मूलेन ललातमालादिना तिसू
 लाधारेषु ध्याय ॥ ४१ ॥ नमः स्मिरसि ॥ ४२ ॥ आधारे ॥ ४३ ॥ दक्षनेत्रे ॥ ४४ ॥ वामनेत्रे ॥ ४५
 ॥ त्रितीयनेत्रे ॥ ४६ ॥ दक्षक्षेत्रे ॥ ४७ ॥ वामक्षेत्रे ॥ ४८ ॥ कक्षेत्रे ॥ ४९ ॥ दक्षक्षेत्रे ॥ ५० ॥ वामक्षेत्रे ॥ ५१
 ॥ कक्षेत्रे ॥ ५२ ॥ दक्षक्षेत्रे ॥ ५३ ॥ वामक्षेत्रे ॥ ५४ ॥ कक्षेत्रे ॥ ५५ ॥ दक्षक्षेत्रे ॥ ५६ ॥ वामक्षेत्रे ॥ ५७ ॥ कक्षेत्रे ॥ ५८ ॥ दक्षक्षेत्रे ॥ ५९ ॥ वामक्षेत्रे ॥ ६०
 मू ॥ समस्तप्रकटगुह्यगुह्यतरसंप्रदायकुलकौलनिगर्जरुद्रस्य अतिरुद्रस्य पराप्र
 रातिरुद्रस्य योगिनीमयुखायै श्रीमता त्रियुरसुंदरी श्रीयमुकायुज्यामिनमः ॥
 इति ध्याय्यदितियं दसाया न्यासः ॥ ६१ ॥ अथ षोडशाया न्यासः ॥ ६२ ॥ सुवामयी ध्यात्वा ॥ ६३ ॥ वामां सेनाराचमुडीनामयत् ॥ ६४ ॥
 अउण निनोधात्वा ॥ ६५ ॥ सुवामयी ध्यात्वा ॥ ६६ ॥ वामां सेनाराचमुडीनामयत् ॥ ६७ ॥

संगुष्टमुष्टिं नु मौ नि विद्या ॥ मू० ललाटे त्रिखंडया ॥ २ मू० मुखे वायकं ॥ २ मू० सर्वो मे ॥ २ मू०
 अंशुनादिमस्तकं ॥ २ मू० सर्वो मे ॥ २ मू० येन्या ह मुखाना ललाटे वृक्षरश्मे न्यस्यत ॥ २ मू०
 येनिसुडया प्रणम्य ॥ २ मू० शिरसि नु मे यत् ॥ इति सौ नाने व र्वनं न्यास ॥ ० ॥ २ मू० वृक्ष
 रश्मे ॥ २ मू० दक्षमपि वं वै ॥ २ मू० वाममपि वं वै ॥ २ मू० ललाटे ॥ २ मू० सर्वो मे ॥ २ मू० मन
 सास्मरेत् ॥ इति सौ मोहनं न्यास ॥ ० ॥ १० क्री नमः ॥ यादयो ॥ १० श्रीं नंदयो ॥ १० क्रीं नानो ॥
 १० क्रीं नानो ॥ १० अंशुनि ॥ १० अंशु ॥ १० नानो ॥ १० अंशु ॥ १० अंशु ॥ १० अंशु ॥ १० अंशु ॥
 १० वृक्षरश्मे ॥ १० वदने ॥ १० नेत्रयो ॥ १० कर्णयो ॥ १० करयो ॥ १० इति सौ तारव
 णं न्यास ॥ ० ॥ शिरो ललाटे च मध्ये कंठहृत्ताम्रिगोचरे ॥ आचारं शुद्धं के दे विरहस्य
 योनिनी न्यसेत् ॥ ० ॥ २ अं० विष्टे स्वरस्त्रियादि गणो समयूखाये श्री महात्रियुर सुंद

र्थे नमः ॥ २ अं० सूर्यरेणुकां वादि नवग्रहसं ॥ २ अं० अंशुनादि नवग्रहसं ॥ २ अं०
 उरतकदैंडा किन्यादियोगिनी सं ॥ २ अं० मेखादि द्वादशरासि सं ॥ २ अं० कामडया
 दिदीठसं ॥ २ अं० कामे स्वररत्यादि सं ॥ ० ॥ ततः बालया मूले नतवयो नि न्यासं विधाय ॥
 शिरसि गुडं चान्या ॥ संयुज्य ॥ स्वसरीरस्त्री वक्रं वं व्याज्या ॥ नवग्रहस्थाने नवग्रहां वि
 नाद्या ॥ २ मू० शिरसि ॥ शिरस्ये गुडं चान्या ॥ स्वसरीरस्थाने नवग्रहां विनास्यासि
 तां नान्यायं वं वं वं कान् ॥ नवग्रहस्थाने नवग्रहां विनास्या ॥ २ मू० वृक्षरश्मे ॥ इति श्री
 वक्रं न्यास ॥ स्थिति न्यासं ततः कुर्यात् श्रीविद्या बोधसाक्षरे ॥ २ श्रीं करयोः यं वं गुलिषु ॥
 २ अं० वृक्षरश्मे ॥ २ श्रीं मुखे ॥ २ श्रीं हृदि ॥ २ अं० नाडीयां ॥ २ अं० गलादिना न्या
 तं ॥ २ मू० वृक्षरश्मे वादि कं ठातं ॥ अक्षरी हवी जपं च कया दं गुलिषु न्यसेत् ॥ इति स्थिति न्यास ॥

अथ सृष्टिं न्यासः ॥ २ क्रीडा मरुते ॥ २ अलिके ॥ ३ नेत्रे ॥ ४ श्रोत्रयो ॥ ५ घ्राणयो ॥ ६ श्रोत्रयो ॥ ७ दं
 यैको ॥ ८ ताडुनि ॥ ९ जिह्वा ॥ १० वोर कये ॥ ११ घृष्टे ॥ १२ सर्वेणे ॥ १३ हृदय ॥ १४ स्तनयो ॥
 १५ कुक्षौ ॥ १६ लिङ्गे ॥ इति सृष्टिं न्यासः ॥ ॥ सर्वेणे न्यसेय स्वातु शायकत्वेन सुदरीयुषा
 यम्य विधिवत् त्रिधा यं वेति वै क्रमात् ॥ सर्वसंकोचि न्यायिवतु देसमुद्रां युद्धस्य ॥ मूलेन
 पुष्पस्येदिति यो दक्षार्ण मूल विद्या न्यासः ॥ अथ पूजा ॥ तत्र स्वामी माधेमात्मा शिवकयो मध्या
 यो कृष्णीया जगत्तेनास्त्रेण यो सवदत्करा न्योत्रिको पावतुर स्वात्मकर्म उलं विरिध्या क
 दवयन मध्ये स्वाग्र्यादिविलोमेन संयुग्मा ॥ मू० श्री महात्रियर सुंदर्या विमेषा द्यवात्रात्राल
 मंडलाय ॥ इति संयुग्मा ॥ अस्त्रेण कालिताधारं संयुग्मा ॥ २ कृष्णमंडलं युद्धं सकला
 तमनेव द्विमंडलाय श्री महा० यात्राधाराय ॥ २ रुद्रं अथ युद्धं द्वादशकलात्मने सु

॥ २ रुद्रं अथ युद्धं द्वादशकलात्मने सु
 र्यमंडलाय श्री महा० यात्रा ॥ २ क्रीयाधिक देवता न्योद्रं कदस्वाहा ॥ वीषट् ॥ अस्त्राय य
 द् ॥ २ ॥ वषट् ॥ स्वाहा ॥ २ नमः ॥ २ सां ॥ २ सां ॥ २ सां ॥ २ को ॥ सुकापि सा ॥ सोपिकाये
 ॥ तिर्थं पाकृष्य अजिमंत्रे अमृती कृय ॥ जलेन विरोममातृ कालुचरय पूया ॥ २ स ॥ २ क
 मयदयो दक्षकलात्मने सोममंडलाय श्री महा० यात्रा मृताय ॥ इत्यष्टगंध पुष्पं निवेद्य ॥
 पूर्वमंडलं विना ॥ २ रुद्रं आनंदं चैरवाय वीषट् ॥ २ स ॥ सुनादे वीषट् ॥ मातृकया वा
 लेयं मूलेन विरजिमंत्रे ॥ २ रुद्रं सुं नमः अमृते अमृते इवे अमृते अमृते अमृते व विधि
 अमृतं सवयश्वाहा ॥ इति धेनुं मुद्रां युद्धस्य ॥ देवी ध्याना ॥ त्रिसंतर्प्य ॥ तदिदुना सर्व
 यो ससृती कृय ॥ एवमेव संयुग्मं यन ॥ ततः स्वमस्तकं गुडगंधादिभिः संयुग्मा ॥ आ
 यावत्स्वायं ॥ विंदुनि शिरसि गुडं संतर्प्य ॥ हृदि मूलेन संतर्प्य ॥ नवलकमव
 ॥ २ रुद्रं अथ युद्धं द्वादशकलात्मने सु

योगिनीसंतर्प्य ॥ तेनासुतेनतत्वेरात्मानं संसोध ॥ २ क ५ युक्त्यहंकारदुष्टमनसो
 वृत्तं कुंजिजाद्यावाकांनियोदयायुयस्तस्यसंस्पर्शसंगभाकासंवायमित्त
 तिलमृमिअं ॥ आत्मतत्वायआत्मनेविश्वयुतुषायविश्वयुतुषात्मनेसरस्वतीदिरत्नो
 गनसहितायसरस्वतीदिरत्नो गनसहितात्मनेआनवमरस्वधनाथं सुलदेहं
 धारेआमतत्वेनसोधयामि ॥ इदंतायावयोद्धूतमदंतायरसामृतं ॥ यराहंतामयंबको
 जूहोमिशिवसूयतः ॥ २ क ५ आत्मतत्वंसोधयामिस्त्रोहा ॥ २ रु ६ मायाकलाविद्याराणका
 लनियतिपुरुषकं १५ विद्यातत्वायविद्यातत्वात्मनेतैजसयुतुषायतैजसयुतुषात्मनेल
 क्ष्मिन्नारायणसहितायलक्ष्मिन्नारायणसहितात्मनेकार्मिकमलसोधनार्थं सुसुदे
 हं ॥ यविद्यातत्वेनसोधयामि ॥ अंतर्निरंतरनिविधनमेधमानेसोदोधकारयदियं
 विज्ञानसंविदग्नौ ॥ कस्योविददूतरीविविकासनूमौ विश्वं जूहोमिवसुधादिसिवावसा

नं ॥ २ रु ६ विद्यातत्वंसोधयामिनमःस्त्रोहा ॥ २ स ४ शिवसक्तिसदाशिवेश्वरसुदुविद्या
 शिवतत्वायशिवतत्वात्मनेप्राज्ञयुतुषायप्राज्ञयुतुषात्मनेविद्यासंकरसहितायविद्या
 संकरसहितात्मनेमायिकमतसोधनार्थंकरसादेहंशिरसिशिवतत्वेनसोधयामि ॥
 तृतीयंमातरासुक्ताः ॥ नैरवासविनायकाः ॥ सत्रयालाख्ययोगिन्योममदेहंशुवस्त्रिताः ॥
 २ स ४ शिवतत्वंसोधयामिनमःस्त्रोहा ॥ २ क ५ रु ६ स ४ युक्त्यहंकारेत्यादि ॥ २ अं ३ ६ अं
 ५० सर्वतत्वायसर्वतत्वात्मनेविश्वतैजसयुतुषायविश्वतैजसयुतुषात्मनेसरस्वतीदिरत्नो
 गनसहितायसरस्वतीदिरत्नो गनलक्ष्मीनारायणविद्यासंकरसहितायसरस्वतीदिर
 त्नो गनलक्ष्मीनारायणविद्यासंकरसहितात्मनेआनवकार्मिकमायिकमलसोधना
 र्थं सुलसूक्ष्मकारणामकाकारणादेहं सर्वोर्गेजीवयरयोरेकां सर्वतत्वेनसोधयामि ॥

ॐ

C

लीनचुम्भात्मकायस्त्रीमहाविपुलसुन्दर्यायोगवीठायनमः ॥ इतिथीठयुजाविधिः ॥
 ॥ अथ व्यान ॥ श्रीश्रीशुद्धाङ्कन ॥ अथ व्यानं वस्त्राणि त्रिदशैः सेवनीयक ॥ उद्यत्
 र्यसदस्यानां यदि मीठारुमप्यनोत्तयाकुसुमसंकासेन्दुसरागमपि पुत्रां ॥ सुकुसुम
 निजातयः कांचनाचायरेसरी ॥ रक्तोत्पलदलाकारजादयन्त्रवद्वज्रिता ॥ अनर्थात्तर
 वितमंजीरवरपादया ॥ यादंशुनीयकस्यार्त्तजोरासिविराजिता ॥ कदलीमलितसं
 नसुकुमारोत्तुकोमला ॥ नितंबदिंदविलसतरक्तवस्त्रवरिस्कृता ॥ मेखलावजुमाणि
 काकिंकिणीनादमंदिता ॥ अलक्षमथमोनिमनानिश्चिता ॥ परायरा ॥ रोमराजिनाना
 महाकुवफलाभिता ॥ सुवृत्तनिविडोत्तुगकुदमंडलराजिता ॥ अनर्थात्तौत्तिकस्तार
 नारविराजिता ॥ नवरत्नप्रभाराजप्रैवेयवरभूषणा ॥ सुतिनूषामलोचना ॥ कपोलक

नमंजरी ॥ उद्यदादित्यसंकासेतातंकसुमखप्रजा ॥ यत्तावंडमुखीवभेवदनामीन
 लेवनो ॥ स्फुरत्सदनकोदंडसुचुवांयदलोवनो ॥ नल्लाट्टसंराजसद्वत्तिल
 कांक्रिता ॥ मुक्तामाणिक्यद्वितमुकुटस्कलकेंकिणी ॥ स्फुरत्तंडकलाराजमुकुटोले
 वनत्रयो ॥ प्रवालवह्निविलसद्गुहवलीवतस्तया ॥ इक्षुकौकुंरुयुषेष्टुवागुक्षुम
 वतुर्नजा ॥ सर्व ॥ मयीमंजरीसर्वसोनाग्रसुंदरी ॥ सर्वतीर्थमयीदिवांसर्वकाम
 प्रयुरिणी ॥ सर्वदुष्टमयीविश्वदयांविश्वमयीशिवी ॥ सर्वान्द्रमयीदेवीसर्वदेव
 स्वइयिणी ॥ सर्वसाधुमयीनित्यांसर्वगमनमस्कृता ॥ सर्वमायमयीदेवीसर्वमाय
 स्वइयिणी ॥ सर्वानंदमयीजानंकरांसंमिदंयरा ॥ एवं व्यान ॥ ॥ सुलेनस्त्रीमहावि
 पुलसुंदरीआवाहितानव ॥ एवं स्थायनं ॥ स्वीरीकरणं ॥ सुमुखीकरणां ॥ सैनिरोधनं ॥

अवसुंठणीं ॥ सकनीकरणीं ॥ अमृतीकरणीं ॥ सर्वकालोन्नितयादिवतुर्दसमुद्रांश
 दर्शयति ॥ म० आसने ॥ स्वानते ॥ धात्रीं ॥ अक्षीं ॥ आवमनायं ॥ मधुयकं ॥ पुनरावमनीयं
 स्नानं ॥ वस्त्रं ॥ गन्धं ॥ अक्षतं ॥ पुष्पं ॥ धूपं ॥ दीपं ॥ नेवेद्यं ॥ तांबूलं ॥ मूतं ॥ श्रीमहात्रियु
 सुंदरीं श्रीपादकां पूजयामितर्ययोमिनमः ॥ इति त्रिसुतयं ॥ मन्त्रात्रिकोष्ठाददिः
 अक्षिसासुरवायवो मन्त्रादिरेकमपूजयत ॥ २ कथसर्वनाहयसक्तिस्त्री ॥ २ रुद्रनिर
 तृतिताशिरसक्तिस्त्री ॥ २ सप्तजनादिवाशिखासक्तिस्त्री ॥ २ कथस्वनंताकक
 क्तिस्त्री ॥ २ रुद्रनित्यमनुव्रतानेवसक्तिस्त्री ॥ २ सप्तजनंतताअस्त्रसक्तिस्त्री ॥ ० ॥ २ अ
 कालेश्वरीस्त्री ॥ २ ओन्नगमालिनीनित्यास्त्री ॥ २ रुद्रनित्यकिंनारी ॥ २ रुद्रिनेडुंडास्त्री ॥ २ रु
 द्रविश्वसिनी ॥ ० ॥ २ मलाविश्वेश्वरीस्त्री ॥ २ रुद्रसिद्धिस्त्री ॥ २ रुद्रविरितास्त्री ॥ २ रुद्र

लसुंदरीस्त्री ॥	२ परशकासाबंदनाथस्त्री ॥	२ किंनारनंदनाथस्त्री ॥
२ रुद्रनित्यास्त्री ॥	२ परशिवानंदनाथस्त्री ॥	२ समयानंदनाथस्त्री ॥
२ ऐनीनयताकास्त्री ॥	२ परासकौंवास्त्री ॥	२ सदाजानंदनाथस्त्री ॥
२ ऐंविजयास्त्री ॥	२ कौरेश्वरानंदनाथस्त्री ॥	इति सिद्धौष्टा ॥
२ ओं सर्वमंगलास्त्री ॥	२ शुक्रादेशंवास्त्री ॥	२ गगनानंदनाथस्त्री ॥
२ जौलातामालिनीस्त्री ॥	२ कुलेश्वरानंदनाथस्त्री ॥	२ विश्वानंदनाथस्त्री ॥
२ रुद्रविजयास्त्री ॥	२ कामेश्वर्यंवास्त्री ॥	२ विमलानंदनाथस्त्री ॥ नाथ
२ अमृतानित्यास्त्री ॥	इति दिव्यौष्टा ॥	२ मदनानंदनाथस्त्री ॥
ततः त्रिकोणाय ॥	२ नैमानंदनाथस्त्री ॥	२ शैवनानंदनाथस्त्री ॥

१लीलानंदनाथसी०॥	२सुखानंदनाथसी०॥	३धरंजयोतिकोसासी०॥
२आत्मानंदनाथसी०॥	३सुखानंदनाथसी०॥	४धरनिखलकोसासी०॥
३प्रियानंदनाथसी०॥	४सुखानंदनाथसी०॥	५अजयाकोसासी०॥
इतिमानोद्या॥	५धरेश्वरीसी०॥	६नातुकाकोसासी०॥
अथैस्वधारंषय॥	६मैगितासी०॥	७सुककल्यलतासी०॥
१सुत्रियुरंसीसी०॥	७निसेश्वरीसी०॥	८स्वरिताकल्यलतासी०॥
२त्रियुरंनैरवीसी०॥	८नवात्मेश्वरीसी०॥	९धारिजातेनिकल्यलतासी०॥
३चैतन्यनैरवीसी०॥	९कुनेश्वरीसी०॥	१०चिकुटाकल्यलतासी०॥
४कुडाणीनैरवीसी०॥	१०वडुयोगेश्वरीसी०॥	११यंवकायेनिकल्यलतासी०॥

१ अघोर नैरवी स्त्री ॥	१ महाकाली स्त्री ॥	१ मू० कामदुघा स्त्री ॥
२ उडु नैरवी स्त्री ॥	२ विदुर सुंदरी स्त्री ॥	२ अमृतवीठ सी कामदुघा स्त्री ॥
३ षट्कट नैरवी स्त्री ॥	३ महाविदुर सुंदरी स्त्री ॥	२ सुधा सी कामदुघा स्त्री ॥
४ नित्या नैरवी स्त्री ॥	४ सुलभालक्ष्मी स्त्री ॥	२ असुतेश्वरी कामदुघा स्त्री ॥
५ चुबने सी नैरवी स्त्री ॥	५ एकाक्षर लक्ष्मी स्त्री ॥	२ अनन्युणा कामदुघा स्त्री ॥
६ अन्नघृणा ॥	६ महालक्ष्मी स्त्री ॥	२ मू० रत्ना स्त्री ॥
७ आद्या सुंदरी ॥ १३१॥ ५॥	७ विभक्तिलक्ष्मी स्त्री ॥	१ सिद्धलक्ष्मी रत्ना स्त्री ॥
८ धिमा स्त्री ॥	८ राजलक्ष्मी स्त्री ॥	१ सज्जमातंगी रत्ना स्त्री ॥
९ अन्नघृणा ॥	९ मू० कोशा स्त्री ॥	२ चुबने स्वरी रत्ना स्त्री ॥

१ श्रीगणेशाय नमः ॥
 २ श्रीवदस्य नमः ॥
 ३ श्रीनंदस्य नमः ॥
 ४ श्रीदेवस्य नमः ॥
 ५ श्रीव्यासस्य नमः ॥
 ६ श्रीरघुस्य नमः ॥
 ७ श्रीकृष्णस्य नमः ॥
 ८ श्रीअर्जुनस्य नमः ॥
 ९ श्रीकामस्य नमः ॥

१० सर्वकामसिद्धिं ॥
 ११ अष्टांगस्य ॥
 १२ श्रीमदस्य ॥
 १३ दुर्गास्य ॥
 १४ श्रीकौमारस्य ॥
 १५ लक्ष्मणस्य ॥
 १६ श्रीवासस्य ॥
 १७ श्रीवसुधस्य ॥
 १८ श्रीमहालक्ष्मणस्य ॥

१९ सर्वयोगिनी ॥
 २० सर्वविघ्नहारी ॥
 २१ श्रीगौरीः विष्णुवक्त्रे ॥
 २२ श्रीगौरीः मूलनेत्रे ॥
 २३ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 २४ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 २५ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 २६ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 २७ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 २८ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥

२९ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३० श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३१ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३२ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३३ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३४ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३५ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३६ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३७ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥

३८ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ३९ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४० श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४१ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४२ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४३ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४४ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४५ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४६ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥

४७ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४८ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ४९ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५० श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५१ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५२ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५३ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५४ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥
 ५५ श्रीगौरीः सर्वसायरे ॥

१ सं सर्व स्वर्ग प्रदात्री ॥
 २ सं सर्वानाममयी ॥
 ३ सं सर्वव्याधि विनाशिनी ॥
 ४ सं सर्वधार स्वयं नि ॥
 ५ सं सर्वपापहरा ॥
 ६ सं सर्वानंद स्वरूपिनी ॥
 ७ सं सर्वरक्षा स्वरूपिनी ॥
 ८ सं सर्वोचित फल प्रदात्री ॥
 ९ श्री क्रीं विष्णु रमणिनी च के

१ पं ॥ हस्त वरं जयती कादि वता श्री ॥
 २ ३ र म र युं सर्वेश्वरी वाग्देवता श्री ॥
 ३ ४ स म री कौलिनी वाग्देवता श्री ॥
 ४ ५ श्री सौः विष्णु रासि द्वा व के स्वरी श्री ॥
 ५ ६ ० ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥

१ मूल ० समस्त च के स्वरी
 श्री महा विष्णु र सुंदरी श्री
 विसे युगः ॥ २ मूल ० रता

स्त्री श्री ० जौ ० मू ० प्रणम्य ॥
 इति वरं मा वरनं ॥
 १ श्री श्री सौ ० सर्व रोग
 हर वक्राय नमः ॥
 २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥

१ कौ कौ अंकुस देवता श्री ॥
 २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ५ ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ६ ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ७ ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ८ ९ ॥ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥

१ समस्त प्रकटा दिवरा
 २ पराति रुद्र स्योनि न्य
 ३ त्रैलोक्य मोदनादि सर्वा
 ४ नंदमय च के समुद्राः
 ५ स सिद्धयः स युधाः स वा
 ६ रुनाः स परि वाराः सान
 ७ काराः सर्वे वयारैः सं दू
 ८ ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥
 ९ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ॥

जिताः संतर्पिताः संतुष्टावरणः संतुष्टांस्तु स्वाहा ॥ इति युष्मांजलिं दत्वा ॥ ररे नमः ॥
 श्रुत्वा तं ह्येनमः ॥ १२० ॥ समस्तयोगिनीं मयूरवायेशीं महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥
 इति यो निमुडाय प्रणम्य ॥ इति नवमावरणं ॥ १० ॥ पुनर्मध्यं त्रिसतर्यं ॥ मूलं नव
 स्यति रसोत्पन्नं नानावर्णं सुतमं ॥ आधाय सर्वदेवानां ध्यायेत्प्रतिगृह्यतां ॥ मूलं सु
 प्रकाशं महादीपं सर्वत्र तिमिराच्छेदं ॥ सर्वाङ्गान्तरं रम्यं तिदीपो यं प्रतिगृह्यतां ॥
 अजितो वेदिको वक्त्रे ॥ दीपमालाद्युत्पन्नाः कपूरं रक्षिताश्चापितैर्लघुर्लोखुवाधियं
 मूलं विः संतर्प्य ॥ देवग्रेवतुरस्रमंडले ससोऽयस्करां न नरितं साधोरं नौजने संसा
 ध्य ॥ शोचणादीनि कृत्वा मूर्तीं कृत्य मङ्गमुडया कृत्वा त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥ मूलं देव
 यत्र गंतं दिशं परमां न सुसंस्कृतं येन वधावड सो येन शिवेन सह द्युतं ॥ इति न

वेद्यं समर्थं ॥ मूलेनायोसां नंदता ॥ मुंजानां परदेवतां ध्यायत् ॥ यस्य नायं जनं निवेद्य ॥ मूलं
 लक्ष्मीं महात्रिपुरसुन्दर्यै यथासुखं तुषधमिति विज्ञाय ॥ मूलेन देवे श्रीं कृते त्वदाकृति
 कमात् ॥ ध्यात्वा यानो तथा ध्यात्वा नडानं स्वसमानकं ॥ एतत्स्वरूपकं जानीयात् दाकुती
 नवधैवकं ॥ बह्वं कुतिषडंगैस्तु नित्यं होमाय मीरितः ॥ ततः स्वासने समुपविश्य ॥
 वक्त्रस्य सायाग्रेयं नैकं वायुं वायुं सुतुजानुं गेव रुक्मराभं चतुरस्रवृत्तं त्रिकोणमंड
 लं विलिख्य ॥ वां वटुकं मंडलाय ॥ यो योगिनी वलिमंडलाय ॥ यो अत्र यात्रे ल
 वलिमंडलाय ॥ गौरीं शिवलिमंडलाय ॥ इति मंडलानि संयुज्या ॥ समस्तानां
 नरितं साधारयात्रं स्तुव्य ॥ एतद्दिदेवीयुत्र वटुकं नाथं शिवं लज्जं नारनासुरवि
 नेत्रं जालासुखं सर्वविद्यानां सयं सर्वोपकारसहितं वलिं गृह्णेरुक्मराभा ॥ वा मां

गुह्यनामिकां वलिदत्वा ॥ इति ब्रह्मांडतो वादिविगणना तलेन तलेनितले वाया
 तलेन तलेन वायव्यनस विरायैयवकुत्रस्थिता वा क्षेत्रे पीठाय पीठादिकुवकृतय
 दाव्यदीया लिमांसैः पीठादेशः सदानसुनवलि विधिना यांतु वीरेंद्रव्याः पी
 थोर्गिनी नमः स्यादा सर्वयोगिनी कुपट स्यादा ॥ वाममध्यमो यरितजं नमिकायो
 धन ॥ सोऽस्या नमज्यालधूयदीया निसहितं वलिगृह्णस्वादा ॥ वामानावमुद्राया ॥
 गोविगुणा यद्वयेवरवरदसर्वजं तमेव समानय वलिगृह्णस्वादा ॥ गजतुंदमुद्रया ॥
 मू० सर्वविद्युर्कुद्राः सर्वभूतेभ्यो वलिगृह्णस्वादा ॥ ५ श्री राजराजस्वर वलिगृह्ण
 रस्वादा ॥ इति वलिदानं विधाय ॥ सुतवर्ति ध्यात्वा ॥ मू० तृप्तासि विज्ञाया ॥ तत्र
 वोसाजादिके दानं ॥ १ मू० नागवल्ली दत्तो येतं धूमजागत रं गितं कपूरवूर्णसंयुतं

तां वलेयतिगृह्णतां ॥ ततः स्वर्णयात्रे नवकोणात्मकं विलिख्य तत्र यथोक्तदीप
 यात्रा निसवतिष्ठत पूर्णानि सद्युगादि प्रादक्षिणेन संस्तव्य ॥ श्री सितिप्रज्ञान्य ॥
 तां पूज्य दक्षिणाधिकान् विधाय ॥ २ श्री श्री गुरुंसेसेसेसे श्री श्री गुरुंसेसेसे ॥ इति संस्तव्य ॥
 मू० मुद्रां मुद्रां ॥ मू० समस्तवक्रवक्रैः सीयुते देवो न वामिके ॥ आराधिका मिदं देवैः
 स्नानममसिद्धये ॥ इति उवरत्नवकारमासस्तव मुद्राय नीराजयित्वा हविर्वाचनमकृ
 ॥ वामजाते ॥ कृमादीनां लया सुवासिनी मूलेन देवता वृथा संस्तव्य तस्य उदानं संव ॥ ज
 लियत्र सिद्धं तु न्यदीयतां विपितां न्युतां लिख्य सुजगै देवी जयं देहिरियं दद ॥ ज
 तथा परावृत्त्या प्रदानं ॥ वस्तु न्यमया दत्तं पीतसंयं कुला मृतं ॥ तत्त्ववृत्तसंदर्भे
 व्यामिसर्वा नीष्टु ददामि ते ॥ इति स्वीकृत्य ॥ १ मू० विसंतप्य ॥ सुदायदस्य ॥ ० ॥

पूर्वप्रतिष्ठितमालामन्त्रेन प्रोक्ष ॥ मांमाले मालामाले सर्वसक्तिस्वरूपिनी वतुवर्ग
 त्रयि न्यस्तसामाने सिद्धिदानव ॥ इति प्रार्थ ॥ २३ ॥ शिष्यै नमः ॥ इति संयुज्य ॥ माला
 मावर्त्तयन्मूलविद्यामस्तोत्ररसतंजयित्वा ॥ २४ ॥ माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा
 नव ॥ सुभक्तुत्वमेन देयसौवीर्यवसर्वदा ॥ इति मालायथास्ताने संस्काप्य ॥ सां
 तनु उकोदकमाशय ॥ मृगुद्यादिगुह्येणैवितं गृह्णानास्मत्कृतजपं ॥ सिद्धिर्न वतु
 मे देवी त्वयुसादात्करस्मिते ॥ इति देव्या दक्षहस्तैर्बु उकोदकदानेन जपं निवेद्य ॥
 कृतांजलिः ॥ २५ ॥ मल्ली कोसहृदययं वसिंहासनात्मकं ॥ फलं कल्पलतानां ववायु
 त्स्युरकरं ॥ वतुरायतनानं दिवतुरन्वयकोमगं ॥ नित्यानंदधरुद्रध्वंसनोमिसु

कल्पवृक्ष ॥ सकमुद्राय दण्य ॥ नावावश्ववरीमृदा ॥ धनूथानिस्र
 धेवच ॥ विश्वरुद्रकमत्स्यं च सकमुद्राय कीर्तिता ॥ यथा मकि
 जयित्वा ॥ सच्चिदानन्दत्रयिणी ॥ वक्त्रारुमस्मीति विवरावयित्वा ॥
 वरियं जनमनूक्तं लक्ष्मीकमायय ॥ ०० ॥ त्र्यम्बकं यजन् ॥ अधवलि
 यं जन ॥ श्रीयन्वदवगायनमः ॥ मूलविद्यायां यागामगयं कृत्वा ॥
 गंधयुष्यादगां दक्षरागनिन्दिया ॥ युधानदद्यानि वामरागनि
 द्या ॥ यान्त्र्यादीर्ययतिष्ठाय ॥ गंधयुष्यादगान् रुक्मगृहीत्वा
 यो यूजां कुर्यात् ॥ ०० ॥ आधानं नमः ॥ कं कर्माय नमः ॥ ००